Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 1, January-2019, ISSN 2230-7540

तुलसीदास की प्रासंगिकता

Bajinder Singh*

Assistant Professor, Department of Hindi, Rajiv Gandhi Mahavidayala, Uchana, Jind

सार – *तुलसीदास रामकाव्य धारा के प्रवत्र्तक कवि हैं और सगुणोंपासक शाखा से सम्बन्धित हैं। राम काव्य परम्परा को उत्कृट एवं गौरवशली स्थान दिलाने का श्रेय अवधी और ब्रज के महाकवि तुलसीदास को ही प्रमुख रूप से जाता है। महर्षि वाल्मीकि ने अपने महान ग्रन्थ 'रामायण' में जिस 'नर' राम की कथा का वर्णन किया है, तुलसी ने उसी 'नर' राम की कथ को 'नारायण' की कथा में परिवर्तित कर दिया। मध्यकाल में सगुण शाखा के अन्तर्गत आने वाली रामकाव्य हारा को दास्यभक्ति के माध्यम से पुष्पित तुलसीदास द्वारा किया गया। भगवान श्री राम को अपना आराध्य मानकर अनन्य भाव की भक्ति तुलसी ने की थी, जिसका चिरकाल तक स्मरण किया जाएगा।*

----------X----------

परिचय:

वर्तमान सन्दर्भ में तुलसीदास प्रासंगिकता के बारे में विचार करना ही हमारा उद्देश्य है। प्रासंगिकता का साहित्य से जोड़कर अर्थ निकाला जाए तो इसका तात्पर्य है- महिमा, महत्त्व, अस्मिता एवं अस्तित्व। तुलसीकृत साहित्य का वर्तमान में कितना महत्त्व है, यही प्रश्न विचारणिय है। विद्वानों के अनुसार तुलसी रचित ग्रंथों की संख्या में मतभेद है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल द्वारा उनके ग्रंथों की कुल संख्या बारह है जिनके नाम इस प्रकार है- वैराग्य-सन्दीपनी, रामचरितमानस, बखै रामायण, रामाज्ञा-प्रश्न पार्वती मंगल, जानकी मंगल, विनयपत्रिका, कृष्ण गीतावली, राम लला नहछू, दोहावली, गीतावली एवं कवितावली। हम इन्हीं ग्रंथों की महिमा के आधार पर तुलसी के साहित्य की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाल सकते हैं। राम-राज्य वर्तमान में सम्पूर्ण विश्व के नेताओं और जनता का सपना बना हुआ है। महात्मा गाँधी ने तुलसीकृत 'मानस' में स्थापित राम-राज्य की अवधारणा को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है। तुलसी ने ही सर्वप्रथम राम-राज्य की अवधारणा इस संसार को दी, जो राज्य अपने में पूर्ण है, वही रामराज है। तुलसी के राम-राज्य का प्रारूप:-

देखिएः-

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। रामराज नहीं काहुहिं ब्यापा।।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती, चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

चारिउ चरन धर्म जग माहीं, पूरि रहा सपनेहुँ अध नाहीं।।

राम भगति रत नर अरू नारी, सकल परम गति के अधिकारी।।

अल्पमृत्यु नहिं कवनिउ पीरा, सब सुंदर सब बिरूज सरीरा।।

नहिं द्ररिद्र कोउ दुखी न दीना, नहिं कोउ अबुध न लच्छान हीना।।

सब निर्दभ धर्मरत पुनी। नर अरू नारि चतुर सब गुनी।।

सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी। सब कृतग्य नहिं कपट समानी।।

राम राज नभगेस सुनु सचराचरा जग माहिं।।

काल कर्म सुभाव गुनकृत दुख काहुहि नाहिं।।1

तुलसीदास (1532ई से 1623 ई0) उन्हें यहाँ से गए एक युग बीत गया है परन्तु जिस राम-राज्य का समना उन्हे देखा था, वह आज भी अपूर्ण है। नेता राम-राज का सपना दिखाकर जनता से वोट ठग रहे है और जनता दुखी है। इसके बावजूद भी पूरे संसार में एक आदर्श शासन व्यवस्था कायम करने की बात की जा रही है। इस प्रकार राम-राज्य की अवधारणा में ताकत है और प्रासंगिकता उसकी बनी हुई है। मध्यकालीन भक्त कवि 'रामचरितमानस' तुलसीदास राम-राज की विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहते है कि उसके कानून-कायदें एवं शान-पद्धति प्रजा के हित में है। भगवान श्रीराम एक आदर्श शासक है और प्रजा की भलाई में सदैव प्रयासरत दिखाई देते हैं। राम

www.ignited.in

अतुलनीय और गुणों की खान तुलसीदास को लगते हैं। उन्होंने सैकड़ों की संख्या में अश्वमेध यज्ञ किए है, वे चक्रवर्ती सम्राट हैं उनके रोएँ-रोएँ में न जाने कितने संसार बसे हुए हैं। प्रकृति में भी गतिशीलता श्री राम के कारण बनी हुई है। यथाः-

"भूमि सप्त सागर मेखला। एक भूप रघुपति कोसला।।

भुअन अनेक रोम प्रति जासू। यह प्रभुता कछु बहुत न तासू।।

सो महिमा समुझत प्रभु केरी। यह बरनत हीनता धनेरी।।

सोउ महिमा खगेस जिन्ह जानी। फिरि एहिं चरित तिन्हहुँ रति मानी।।

सोउ जाने कर फल यह लीला। कहहिं महा मुनिवर दमसीला।।

राम राज कर सुख संपदा। बरनि न सकइ फनीस सारदा।।

सब उदार सब पर उपकरी। बिप्रखरन सेवक नर-नारी।।

एक नारी व्रत रत सब झारी। ते मन वच क्रम पति हितकारी।।

दंड जतिन्ह कर भेद जहँ नर्तक नृत्य समाज।

जीतहु मनहि सुनिअ अस रामचन्द्र के राज।।2

राम काव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ भक्त कवि तुलसीदास व उनके साहित्य के उच्च आदर्शों को राम-राज में वर्णित समन्वय की भावना भी वर्तमान सन्दर्भ में विभिन्न धर्मों एवं जातियों के मेल-मिलाप को लेकर भी उनकी प्रासंगिकता को प्रामाणित करती हैं। कवि के अनुसार राम-राज्य में ताकतवर और दुर्बल आपस में मिल-जुलकर रहते हैं। सबकी भी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। स्नेह भावना प्रबल है, प्राकृतिक उपादान भी प्रजा के हित में हैं। दसों दिशाएं शांत और बन स्पतियाँ मानव के विकास में सलंग्न हैं। यथाः-

"फूलहिं फरहिं सदा तरू कानन। रहहिं एक साँग गज पंचानन।।

खग मृग सहज बयरू बिसराई। सबन्हि परस्पर प्रीति बुढाई।।

कूजहिं खग मृग नाना ब्रंदा। अभय चरहिं बनकर हिं आनदा।।

सीतल सुरभि पवन बह मंदा। गुंजत अलि लै चलि मकरंदा।।

लता बिपट मांगे मधु चवहीं। मन भावतो धेतु स्रवहीं।।

ससि संपन्न सदा रह धरनी। त्रेतां भइ कृतजुग कै करनी।।

प्रगटीं गिरिन्ह बिबिध मनि खानी। जगदातमा भूप जग जानी।।

सरिता सकल बहहिं बर-बारी। सीतल अमल स्वाद सुखकारी।।

सागर निज मर जादाँ रहहिं। डारि रत्न तटहिं नर लहहीं।।

सरसिज संकुल सकल तड़ागा। अति प्रसन्न दस दिसा विभाग।।

बिधु महि पूर मयूरन्हि रवि तप जेतनेहि काज।

मांगे बारिद देहिं जल रामचन्द्र के राज।।3

महात्मा तुलसीदास भगवान श्रीराम की भक्ति एवं आस्था पर गहरा विश्वास था। वे एक आस्थावान एवं आस्तिक कवि रहे हैं। उनका सोचना है कि हमें श्रीराम से ही माँगना चाहिए। इस संसार के आगे हाथ फैसला बेकार है। अहिल्या, शबरी, बिभीषण, सुग्रीव एवं मारीच जैसों का उद्धार भगवान श्रीराम ने ही किया है। उनके द्वारा मर्यादित जीवन भारतीय सभ्यता-संस्कृति में आज भी मिशाल बने हुए है देखिएः-

"जग जाचिअ कोउन, जाचिअ जौं जिय जाचिअ जानकी जानहिरो।

जेहि जाचत जाचकता जीर जाइ, जो जारति जोर जहानहि रे।

गति देखु बिचारि बिभीषनकी, अरू आनु हिएँ हनुमानहिरे।

तुलसी! भजु दारिद-दोष-दावानल संकट-कोटी-कृपानहि रे।4

तुलसीदास द्वारा 'कवितावली' में स्वदेश प्रेम की भावना वर्तमान में हमें यही सन्देश देती है कि हमारे अन्दर कौमी एकता का भाव होना चाहिए। अवगुणों का त्याग करके सहनशीलता को अपनाना, दुःखों की समाप्ति हेतु राम भक्ति को समर्पित हो जाना ही मानव धर्म है। साथ ही वे समझाना चाहते है कि मनुष्य अपने कर्मों को अवश्य भोगता है।

यथा-

"भलि भारतभूमि, भलें कुल जन्मु, समाजु सरीरू भलो लहि कै।

करषा तलि कै पुरूषा बरसा हिम, मारूत, धाम सदा सहि कै।।

जो भजै भगवान समान सोई, 'तुलसी' हठ चातकु ज्यों गहि कै।

नतु और सबै बिषबीज बए, हर हाटक कामदुहा नहि कै।।"5

तुलसीदास की प्रासंगिकता इस बात में भी है कि वे मानव को सचेत करते हुए कहते हैं कि हमें कभी भी अनावश्यक विधियों से धन सम्पदा एकत्रित नहीं करनी चाहिए। ऐसे व्यक्ति जो

www.ignited.in

रूपया-पैसा कमाने हेतु राम भक्ति से दूर हो गए है, अभिमानी और महामूर्ख मानते हैं। यथा-

"झूठो है झूठों है, झूठो जगु, संतक हंत जे अंतु लहा है।

तको सहै सठ! संकट कोटिक, काढ़त दंतक रंत हहा है।।

जानपनीकौ गुमान बड़ो, तुलसी के विचार गँवार महा है।

जनकी जीवनु जान न जान्यौ तौ जान कहावत जान्यो कहा है।।6

तुलसी का युग संक्रमण काल कहा जा सकता है। दो अलग-अलग संस्कृतियाँ हिंदू और मुसलमान (इस्लाम) आपस में टकरा रहीं थी। रोजगार के अवसर लगभग समाप्त हो गए थे। हिंदू जनता का शोषण इस्लाम शांसको द्वारा किया गया था। वर्तमान में गतिशील लोकतान्त्रिक प्रणाली और तुलसी युग का तुलनात्मक अध्ययन करें तो हमें ज्ञात होगा वहीं धर्म, जाति एवं रोजगार की समस्याएँ ज्यों की त्यों बनी हुई है। यथा-

"खेती न किसान को, भिखारीको न भीख, बलि,।

जीविका विहिन लोग सीदूयमान सोच बस,

कहैं एक एकन सो 'कहा जाई, का करी'?7

निष्कर्ष:

इस प्रकार कहा जा सकता है कि तुलसी अपने युग के प्रति अत्यन्त सचेत थे। उन्होंने वही लिखा जिसे उन्हांने अनुभूत किया और जो सोलह आने सत्य भी था। भक्ति-भावना, समन्वयत्मकता, भ्रातृत्व, विषय की व्यापकता, तत्कालीन समाज का चित्रण, युगबोध आदि विषयों पर साहित्य निर्माण किया। उन्हें सदैव स्मरण किया जाएगा।

सन्दर्भ सूभी

क्र0 संख्या--कवि का नाम--थ का नाम

1. तुलसीदास--रामचितमानस (उत्तरकाण्ड)

2. तुलसीदास--रामचितमानस (उत्तरकाण्ड)

3. तुलसीदास--रामचितमानस (उत्तरकाण्ड)

4. तुलसीदास--कवितावली (उत्तरकाण्ड)

5. तुलसीदास--कवितावली (उत्तरकाण्ड)

6. तुलसीदास--कवितावली (उत्तरकाण्ड)

7. तुलसीदास--कवितावली (उत्तरकाण्ड)

Corresponding Author

Bajinder Singh*

Assistant Professor, Department of Hindi, Rajiv Gandhi Mahavidayala, Uchana, Jind

www.ignited.in